

1st Public Program

Date : 10th April 1990
Place : Kolkata
Type : Public Program
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 06
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	07 - 09

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

सत्य के बारे में जान लेना चाहिए कि सत्य अनादि है और उसे हम मानव बदल नहीं सकते। सत्य को हम इस मानव चेतना में नहीं जान सकते। उसके लिए एक सूक्ष्म चेतना चाहिए। जिसे आत्मिक चेतना कहते हैं। आप अपना दिमाग खुला रखें वैज्ञानिक की तरह, और अगर सत्य प्रमाणित हुई तो उसे अपने इमानदारी में मान लेना चाहिए।

एक महान सत्य यह है कि सृष्टि की चालना एक सूक्ष्म शक्ति करती है जिसे परम चैतन्य कहते हैं। ये विश्व व्यापी है और हर अणु-रेणु में कार्यान्वित है। हमारे शरीर के स्वयं चालित (ऑटोनॉमस) संस्था को चलाती है। जो भी जीवित कार्य होता है वो उससे होता है। पर अभी हममें वो स्थिती नहीं आई है जिससे हम परम चैतन्य को जान लें।

दूसरा सत्य यह है कि हम यह शरीर, बुद्धि, अहंकार और भावनाएँ आदि उपादियाँ नहीं हैं। हम केवल आत्मा हैं। और ये सिद्ध हो सकता है।

तीसरा सत्य यह है कि हमारे अन्दर एक शक्ति है जो त्रिकोना-कार अस्ती में स्थित है, और यह शक्ति जब जागृत हो जाती है तो हमारा सम्बन्ध उस परम चैतन्य से प्रस्थापित करती है। और इसी से हमारा आत्म दर्शन हो जाता है। फिर हमारे अन्दर एक नया तरह का अध्याम तैयार हो जाता है, जो हमारे नसों पर जाना जाता है। जो नस नस में जानी जाए, वोही ज्ञान है। इसको जानने के लिए कुण्डलिनी का जाग्रण होना चाहिए। ये स्वयं आपकी माँ है। ये आपही की है, और ये माँ आप को पुर्नजन्म देती है। जिस तरह से टेप रिकार्डर में आप सबकुछ टेप कर सकते हैं, उसी तरह इस कुण्डलीनी ने आपके बारे में सब कुछ जान

लिया है। क्योंकि ये साढ़े तीन कुण्डलों में बैठी हुई है इसलिए इसे कुण्डलीनी कहते हैं। ये शुद्ध इच्छा की शक्त है। कोई भी इच्छा पूर्णतया पूर्ण हो जाने पर भी मनुष्य उससे सन्तुष्ट नहीं होता क्योंकि सर्वसाधारण इच्छा तृप्त होती नहीं। जब ये शक्ती ऊपर की ओर उठती है तो 6 चक्रों में गुजराती, छठे चक्र से ब्रम्हरंद्र को छेदती हुई बाहर निकल आती है। तब ये सूक्ष्म चीज़ आपको चारों तरफ फैले हुए सूक्ष्म शक्ती से [पर चैतन्य से] एकाकीरता देती है। जैसे माईक है, अगर हमने इसे मेन्स के साथ नहीं जोड़ा तो ये बिल्कुल बेका है। इसी प्रकार मनुष्य भी उस परम चैतन्य को प्राप्त किए बिना सत्य को नहीं जान सकता है। सब अपने अपनी बात को सत्य मानते हैं। सत्य में कोई भी मतभेद नहीं होता। वो मतभेद सत्य के अलग पहलू हैं तो अलग ढंग से देखे जाते हैं। जब तक आपके चित्त में आत्मा नहीं आता है तब तक आपके अन्दर आत्म प्रकाश नहीं आता और आप अंधेरे में ही टटोलते रहते हैं। मनुष्य ने समाज की धाराणाएँ बनाई हैं इसलिए हमारे समाज में त्रुटियाँ हैं, सन्देह है, भ्रंशित है। हमें उस स्थिती को प्राप्त करनी चाहिए जिससे हम बड़े, ऋषि, मुनि, अवतरण, वली, तीर्थस्थानकर आदि को समझ सकें और इन लोगों के जैसे बन जाएँ। मतलब, धर्म की धारणा हमारे अन्दर होती है। मगर जो एक धर्म का ही पालन करता है वो कोई भी पाप कर्म कर सकता है। गलती कर सकता है। क्योंकि धर्म की भावना तो सिर्फ आपकी विमागी जमा खर्च है। उसका आपके अन्दर प्रवेश नहीं हुआ। धर्म की धारणा अपने अन्दर करने से ही हमारा हित होगा।

किन्तु ये करते वक़्त एक सहज तरीके से कुण्डलीनी उठती है क्योंकि ये एक जीवन्त प्रक्रिया है। जैसे पृथ्वी में आप बीज छोड़ दे तो वो सहज में ही पनप जाता है। हर एक में उसी प्रकार ये कुण्डलीनी बैठी हुई है कि जब मेरा बेटा चाहेगा तब मैं उठूंगी। वो ज़बरदस्ती से आपको पुनर्जन्म नहीं देना चाहती है। आपकी स्वतंत्रता को ही देखकर जागृत होगी। और कोई भी इस मामले में ज़बरदस्ती नहीं कर सकता। सबसे पहले कुण्डलीनी जाग्रण से आपकी शारीरिक स्थिती ठीक हो जाती है। क्योंकि आपके शरीर में सारे चक्र पूरे प्लावित हो जाते हैं। इन्हीं चक्रों के शक्ति के द्वारा हम जीवित हैं और उसी से हमारा सारा व्यवहार चल रहा है। किन्तु जब हम शक्ति को अनायास बहुत ज्यादा झुत्तेमाल करते हैं तब ये चक्र क्षीन हो जाते हैं। इस तरह से हमारे अन्दर बीमारियाँ आ जाती हैं। लेकिन कुण्डलीनी जाग्रण के बाद तो जिन बीमारियों का इलाज ही नहीं, जो मरने तक आ गए ऐसे बीमारियाँ एक ही रात में ठीक हो गईं।

इसके लिए हमें ऋषि मुणियों का धन्यवाद करना चाहिए, जिन्होंने सहज योग ढूँढ़ निकाला। पहले एक या दो इन्सान ही इस योग को जानते थे। किन्तु ऐसा समय आ गया है कि आपको सामूहिक तरीके से जागृति हो सकती है। इस तरह की जागृति होने से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और सांसारिक व्यथाएँ दूर हो जाती हैं। और लक्ष्मी का भी आप पर बहुत आशीर्वाद आता है। क्योंकि हमने लक्ष्मी देवी, सरस्वती देवी का साक्षात् पाया नहीं था हमें लगा कि ये सब होता ही नहीं है। उसको सिद्ध करने का समय आ गया है। ऑस्ट्रेलिया में दो ओडस के आदमी ठीक हो गए सहज योग से। अपने देश में इतनी व्यथाएँ हैं, इतनी गरीबी है। इन

लोगों के पास पैसा नहीं कि वो अपनी बिमारीयाँ ठीक करें, डाक्टरों के बिल भरें, ऐसे लोगों के लिए सहज योग बहुत उपयुक्त है। सहज योग से आपकी खेती में, पशुपालन में सबमें बहुत असर आता है। अनेक क्षेत्रों में इसका कार्य हो सकता है। सहज योग से आपके अन्दर शान्ति प्रस्थापित होती है। जिनके अन्दर शान्ति नहीं वो बाहर किस तरह से शान्ति प्रस्थापित करेंगे।

आपके अन्दर साक्षी - स्वरूप तत्व आ जाता है। आप के अन्दर निर्विचार समाधि स्थापित हो जाती है। फिर उसके बाद निर्विकल्प समाधि, माने, चेतना आपके अन्दर आ जाती है। आपके नस नस में सामूहिक चेतना जागृत हो जाती है जिसके अनुसन्धान से आप जान सकते हैं कि दूसरे आदमी को कौन सी शिकायत, झुट है। और आपको कौन सी शिकायत और झुट है। उसको ठीक करने की क्रिया अगर आप सीख लें तो आप दूसरों की भी मदद कर सकते हैं और अपनी भी मदद कर सकते हैं। इसके लिए आप पैसा आदि कुछ नहीं दे सकते। जो इन्सान परमात्मा के नाम पर पैसा ले वो आपका गुरु नहीं, आपका नौकर है। मैं एक माँ हूँ और मैं ये कहूँगी कि जिस गुरु ने आपकी तबीयत ही ठीक नहीं रखी, ऐसे गुरु को रखने से क्या फायदा। गुरु दर्शन के लिए नहीं होता है। गुरु ज्ञान के लिए होता है और अनुभव के लिए। इसी तरह पढ़ पढ़ करके आप परमात्मा को नहीं जान सकते। क्योंकि परमात्मा बुद्धि से परे हैं। प्रश्न पूछने से या उसका उत्तर पाने से क्या कुण्डलीनी का जाग्रण हो जाएगा?

अमीबा से हम मनुष्य स्वरूप हुए। इससे ऊँची एक और दशा है, कि हमें आत्म स्वरूप होना चाहिए। और जब तक हम आत्म स्वरूप नहीं होते, हमें चैन नहीं आने वाला। आपकी सम्पत्ती और आपको ही देने आए हैं। इससे आपको क्यूँ दिक्कत होना चाहिए। आपके अन्दर एक बड़ा भारी हीरा चमक रहा है जिसे आत्मा ढहते हैं। इसे प्राप्त करें।

मानव सबसे ऊँची चीज़ है उत्क्रान्ति में। उसे बस इतना ही प्राप्त करना है। रूस के लोग बहुत ढहरे हैं। उन्होंने कभी धर्म नहीं सुना, कभी देवी का नाम नहीं सुना। पर ये लोग एक दम पार हो गए। तने शुद्ध तबीयत के लोग जो खोज रहे हैं अन्दर से सत्य। वहाँ की गवर्नमेंट ने भी हमें रिकगनाइज कर लिया है और साईबीरिया तक सहज योग फैल गया है। मेडिकल में, फ़ज्युकेशन में हर चीज़ में। वहाँ के मिनिस्टर्स तक। उन लोगों में अहंकार नहीं है। इसीलिए शायद इस तरह से ये कार्य हुआ है। आशा है यहाँ पर भी इसी प्रकार ये कार्य होगा। ये तो देवी का बड़ा भरा स्थान है और कलकत्ते से तो मुझे बहुत ज्यादा अपेक्षा है।

जब तक हम सत्य को जान नहीं लेते तो किसी भी बात को प्रमाण मान लेना या सत्य मान लेना बहुत बड़ी गलती कर देता है। बहुत लोग सोचते हैं कि ये धर्म सत्य है, वो धर्म सत्य है। सत्य एकही है।

कुण्डलीनी से किसी को भी तकलीफ़ नहीं होती। उत्क्रान्ति में हमने जो कुछ पाया है तो हमारे सेन्ट्रल वर्ल्स सिस्टम में जानते हैं। एक जानवर, समझे एक कुत्ता, वो गर गन्दी गली से निकल जाए तो उसे कोई

तकलीफ नहीं होती। लेकिन मनुष्य ये नहीं कर सकता क्योंकि उसके अन्दर एक चेतना आ गई है जिससे वो गन्दगी को देखता है, समझता है और धृष्ट करता है। इसी प्रकार हमारी ये चेतना प्रगल्भ हो जाती है, और हमारे अन्दर ही धर्म धारणा हो जाती है तो फिर वो कोई गलत काम नहीं करता। जैसे सन्त साधु कभी गलत काम नहीं करते थे।

जब कुण्डलीनी का जाग्रण होता है तो हमारे अन्दर पूरी तरह से राजयोग प्रतीत होता है। जैसे जब मोटर आपने शुरू कर दी तो उसकी मशीनरी अपने आप चलने लग जाती है, उसी प्रकार जब कुण्डलीनी जाग्रत होती है तो किसी भी चक्र से गुजरती है तो वो चक्र का बन्ध पड़ जाता है, जिससे कि कुण्डलीनी नीचे न आए। लेकिन जब विशुद्धी चक्र पर आती है तो आपकी जुबान भी अन्दर के तरफ धोड़ी सी खिच जाती है बन्द के लिए। इसका मतलब ये नहीं कि मोटर शुरू करने से पहले आप धक्का घुमाना शुरू करें। आजकल के योग जो मनुष्य ने बनाये हैं वो उसी प्रकार के कृत्रिम हैं। हठ योग तभी करना चाहिए जब कुण्डलीनी का जाग्रण हो। जब शारीरिक दोष हो उस चक्र पर, तब आपको आसन लगाना चाहिए। हठ योग हम ऐसे करते हैं जैसे की सारी दवाईयाँ एक साथ खा रहे हों। प्राणायम भी हम कृत्रिम तरीके से ही करते हैं। जिस वक्त आपकी कुण्डलीनी चढ़ती है और आपके अन्दर राईट साइड की शक्ती कम हो जाए, तब हम लोग प्राणायम कर सकते हैं, पर सूझ बूझ के साथ। पर आप बेकार में ही प्राणायम करें तो हो सकता है कि आप को व्याधियाँ हो जाएँ, या आप एक दम शुष्क हो जाएँ। इतने शुष्क हो जाएंगे की आपके अन्दर कोई भावना नहीं रह जाएगी। और हो सकता है कि आप अपने पत्नी को, बच्चों को छोड़ दें और सोचें कि मैं बड़ा भारी साधू सन्यासी बन गया। इस तरह का असंतुलन, जीवन में आ जाता है। जिस वक्त जिस चीज़ की ज़रूरत होती है वो सिर्फ कुण्डलीनी के जाग्रण के बाद ही जानी जाती है कि आज कुण्डलीनी उठके कौन से चक्र पे गई और कहाँ रुकी।

हमारे अन्दर तीन नाडीयाँ हैं। पहली है महाकाली की नाड़ी। ये बाएँ ओर की सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम को देखती है और दाएँ ओर की नाड़ी है महा सरस्वती की, वो हमारे राईट साइड की सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम को देखती है। बीच की नाड़ी जो सुषुम्ना नाड़ी है वो हमारी पौरा सिम्पैथेटिक सिस्टम को देखती है। बाएँ ओर जो है वो सिर्फ हमारी भावनाएँ, हमारे इच्छाओं को पूरा करती है। ये इच्छा शक्ती की डडा नाड़ी है। या चन्द्र नाड़ी जो कुछ हमारा भूतकाल है, वो लेफ्ट साईड में इसके साथ समाहित है।

राईट साइड की नाड़ी को सूर्य नाड़ी या पिंगला नाड़ी कहते हैं। ये हमारे शारीरिक और मस्तिष्क के काम - सोचना, विचारना आदि के कार्य करती है। ये कार्यान्वित होती है जब हम भविष्य की सोचते हैं। मध्य नाड़ी इन दोनों को संतुलन में रखती है। जैसे कि आप बहुत जोर से दौड़े तो आप के हृदय के ठोके बढ़ जाएंगे। लेकिन इन ठोकों को फिर शान्त कर देना तो किस तरह से बिल्कुल नॉर्मल हो जाते हैं, ये पारा सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम या सुषुम्ना नाड़ी का काम है। जब कुण्डलीनी जाग्रत होती है तो सुषुम्ना नाड़ी के अन्तरतम जो नाड़ी है जिसे ब्रह्म नाड़ी कहते हैं, उससे जाती है। और एक बाल के जैसे शक्ती ऊपर जाकर के ब्रह्मरंड को छेदती है। ये छेदन होते ही ऊपर से परम चैतन्य बहने लगता है और उससे आपके संकीर्ण चक्र खुल जाते हैं। इस प्रकार आपका सम्बन्ध उस परम चैतन्य से हो जाता है जिसकी सूक्ष्म सृष्टि है और जिसे हमने आज तक जाना नहीं। ये जानना हमारे उँगलियों पर होता है। हाथों में चैतन्य की लहरीयाँ बहने

शुरू हो जाती है। श्री शंकराचार्य ने इसे "सलीलम" कहा है। ठंडी ठंडी हवा, हाथ में आने लग जाती है। ये हवा हमको बताती है और जताती है कि हमारे अन्दर कौन से दोष हैं और दूसरों के अन्दर कौन से दोष हैं। जब हमारा ब्रम्हरन्द छेद होता है तो हमारे सिर से भी ठंडी हवा आने लगती है। पर जब तक हम इसका उपयोग नहीं करेंगे हम समझ नहीं सकेंगे कि ये ठंडी हवा क्या चीज़ है और इससे क्या प्राप्त होता है।

जब मनुष्य अपने भूतकाल के बारे में सोचता है, और हर समय दुखी रहता है और अपने को बहुत न्यून समझता है। उस वक़्त हम इस नाड़ी पर गिरते गिरते हम सामुहिक सुप्त चेतना में चले जाते हैं। (क्लेक्टिक सब-कोनशस) इससे हमें बहुत मानसिक त्रास होता है। ऐपिलैप्सी की बिमारी हो जाती है। दुःखी किसम के लोग होते हैं, जो लोग पागल हो जाते हैं, ये सब इसी नाड़ी के कारण।

दाये और की नाड़ी कम होती है जब हम बहुत ज़्यादा सोचते हैं, या बहुत शारीरिक श्रम करते हैं। बहुत ज़्यादा सोचने से हमारे अन्दर बहुत असंतुलन आ जाता है। अगर हम संकीर्ण होते जाएंगे और आपकी शक्ति भी क्षीण होती जाएगी अगर किसी आघात से, बाएँ या दाये इसे तोड़ दे तो आपका सम्बन्ध जो मेन्स से है, वो टूट जाएगा। डायबिटीय, लिंवर, किडनी की बिमारी पिंगला नाड़ी में खराबी आने से हो जाती है। ब्लड प्रेशर, टेन्शन वगैरह होता है। इसका एक ही कारण है - आजकल का जीवन। इसमें हमें बहुत संघर्ष से रहना पड़ता है। और फिर मनुष्य बहुत सोचता है। आगे की बातें सेचता रहता है। इस सोच विचार से आपकी स्वाधिष्ठान चक्र, जिसे एक बहुत ज़रूरी कार्य करना होता है। कि हमारे मस्तिष्क में जो ग्रे सेल्स हैं, उनको बार बार पूरा करें। बहुत विचार करने से ये ग्रे सेल्स खत्म होते जाते हैं, और सारा ध्यान इस चक्र का जाता है सिर्फ ग्रे सेल्स बदलने में। तो बाकी के जो काम वो करता है वो रह जाते हैं। जैसे लिंवर को प्लीहा, पाचग्रन्थी, गुर्दा, अँतड़ी को देखना। तो इन में बिमारीयों हो जाती हैं। ये सिर्फ सृज्योग के द्वारा ठीक कर सकते हैं। कुण्डलीनी जाग्रण से, इन चक्रों को फिर से जोड़ देती है। और फिर से खोल देती है, और फिर से शक्ति उस चक्र में आ जाती है और कुण्डलीनी स्वयं ही उस चक्र को प्रभावित कर देती है।

डायबिटीस बहुत सोच विचार करने वाले लोगों को होती है। तो उनका पैन्क्रियास खराब हो जाता है। स्नून का कैंसर हमारे प्लीहा के वजह से होता है। आज कल का जीवन बहुत ही उथल पुथलवाला है। तो उसे शोक लगता है फिर ये स्प्लीन थक जाती है फिर ब्लड कैंसर हो जाता है। हमारे आजकल का जीवन बहुत असंतुलन का जीवन हो गया है। इस वक़्त हम कुण्डलीनी जाग्रण से ही अपने चक्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

इडा नाड़ी के बारे में कहना है कि जो मनुष्य रात दिन रोते रहता है। बंगाल में इतनी कला है, देवी का इतना कार्य हुआ तो यहाँ इतनी गरीबी क्यों। इसका एक कारण ये है कि यहाँ काला जादू, तंत्रिक बहुत है। पूरे विश्व में से यहाँ सब से ज़्यादा है। महाकाली के विरोध में ये लोग कार्य करते हैं। अगर इस काली विद्या को आप उखाड़ फेंकिये, तो देखिये कि लक्ष्मी का वास यहाँ आ जाएगा। इस काली विद्या से बहुत लोग यहाँ पर बिमार हैं। अगर आपको सत्य को खोजना है और अगर आप अपना हित चाहते हैं तो ये सबको छोड़कर के सृज्योग में आएं।

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

सत्याच्या बाबतीत जाणून घेतले पाहिजे की, सत्य आहे आणि आपण मानव त्याला बदलू शकत नाही. सत्याला या मानवी चेतनेमध्ये आपण जाणू शकत नाही. त्यासाठी एक सूक्ष्म चेतना पाहिजे, त्याला आत्मिक चेतना म्हणतात. पन्नाचा वैज्ञानिकप्रमाणे आपण आपली बुद्धी उघडी ठेवा आणि सत्य सिध्द झालं, तर इमानदारीने त्याला मानून घ्या.

एक महान सत्य हे आहे की सृष्टीची चालना एक सूक्ष्म शक्ति करते आहे. त्याला परमचेतन्य म्हणतात. ती विश्वक्यापी आहे व प्रत्येक अणुरेणूमध्ये कयान्वित आहे. आपल्या शरीरांतील स्वयंचालित संस्थेला ऑटोनोंमस नर्व्हस सिस्टिमला चालवते. जे कांही जिवंत कार्य होते ते तिच्यायोगे घडते. पण अजून आपल्यांत ती स्थिती आलेली नाही ज्यामुळे आपण परमचेतन्याला जाणू शकू.

दुसरे सत्य हे आहे की आपण, हे शरीर, बुद्धी, अहंकार, भावना वगैरे उपाधी नसून, फक्त आत्मा आहोत. आणि हे सिध्द हाऊं शकते.

तिसरे सत्य हे आहे, की आपल्या आंत एक शक्ति आहे, जी त्रिकोणाकार अस्थिमध्ये स्थित आहे. आणि जेव्हा ही शक्ति जागृत होते तेव्हा आपला संबंध त्या परमचेतन्याशी प्रस्थापित करते. आणि याप्रकारेच आपले आत्मदर्शन होते. मग आपल्या आंत एक नवी डायमेशन - नवे क्षितीज- तयार होते ज्यामुळे आपल्या नसांवर समजू शकते. जे नसांवर कळते तेच ज्ञान आहे. हे समजण्यासाठी कुंडलिनीचे जागण पाहिजे. ती स्वतः आपली आई आहे. ही आपलीच आई आहे. आणि ही आई आपल्याला पुनर्जन्म देते. टेपरेकॉर्डरमध्ये जसे आपण सर्व कांही टेप करू शकता त्याप्रमाणे या कुंडालिनीने आपल्याविषयी सर्व कांही जाणलेलं आहे. साडेतीन कुण्डलांमध्ये ही वसली आहे त्यामुळे हिला आपण कुण्डलिनी म्हणतो. ही शुध्द इच्छेची शक्ति आहे. कुठलीही इच्छा पूर्णतया पूर्ण झाल्यावर माणूस त्याने संतुष्ट होत नाही कारण सर्वसाधारण इच्छा तृप्त होत नाहीत. जेव्हा ही शक्ति वर उठते तेव्हा सहा चक्रांमधून निघून सहाव्या चक्रांतून ब्रम्हरंणाला छेदून बाहेर निघून येते. तेव्हा ही सूक्ष्म गोष्ट

आपल्या चारी बाजूला पसरलेल्या सूक्ष्मशक्तिशी - परमचेतन्याशी एकाकार होते. जसा माईक आहे, याला आम्ही मेन्सला जोडला नाही तर हा एकदम वेकार आहे. याप्रमाणे मानवसुद्धां त्या परमचेतन्याला प्राप्त केल्याशिवाय सत्य जाणू शकत नाही. सगळे आपल्या आपल्या गोष्टीला सत्य मानतात. सत्यामध्ये कांही मतभेद असू शकत नाही. ते मतभेद सत्याचे वेगळे पैलू आहेत तेव्हा वेगळ्या त-हेने पाहिले जातात. जोपर्यंत आपल्या चिंतनामध्ये आत्मा येत नाही तोपर्यंत आपल्यामध्ये आत्मप्रकाश येत नाही आणि आपण जंधारांतच चाचपडत राहता.

मानवाने समाजाच्या धारणा केल्या आहेत. त्यामुळे आपल्या समाजांत कमतरता आहेत, संदेह आहेत, भांती आहे. ज्या स्थितीमुळे आपण मोठमोठे ऋषि, मुनी, अवतार, वली, तर्ककार वगैरेना समजू शकू आणि त्यांच्यासारखे वनू शकू अशी स्थिती आपल्याला प्राप्त केली पाहिजे. याचा अर्थ असा की धर्माची धारणा आपल्या आंत असते. पण जो कोणी एकाच धर्माचे पालन करतो तो सुद्धा पापकर्म करू शकतो. दूषा करू शकतो. कारण धर्माची भावना हा फक्त आपल्या बुद्धीचा जमल्लव असतो. त्याचा आपल्यामध्ये प्रवेश झाला नाही. आपल्या आंतमध्ये धर्माची धारणा करूनच आपले ढित होइल.

परंतु हे करतांना एका सहजप्रकारे कुंडलिनी उत्थान पावते कारण ही जिवंत प्रक्रिया आहे. जसे पृथ्वीवर आपण बी सोडलं तर ते सहजच रुजतं. प्रत्येकांत अशाच प्रकारे कुंडलिनी वसतली असते, जी जेव्हा माझं मूल इच्छा करेल त्यावेळी मी उठेन. ती जबरदस्तीने आपल्याला पुनर्जन्म देऊ इच्छित नाही. आपलं स्थान त्या पाहूनच ती जागृत होते. आणि या बाबतीत कोणीच जबरदस्ती करू शकत नाही. सर्वत आधी कुंडलिनीच्या जागरणाने आपली शारीरिक स्थिती ठीक होते. कारण आपल्या शरीरातील सारे चक्र पूर्ण फलवित होऊन जातात. या चक्रांच्या शक्तिमुळेच आपण जिवंत आहोत आणि त्यांच्यामुळेच आपला सर्व व्यवहार चालतो. परंतु जेव्हा आपण शक्तिचा विनाकारण फार जास्त वापर करतो. तेव्हा ही चक्रे क्षीण होतात. यामुळे आपल्यामध्ये रोग येतात. पण कुंडलिनी जागरणामुळे तर ज्या रोगांचा इलाज नाही असे अशा असाध्य रोगांमुळे मरायला टेकलेले लोक सुद्धा एका रात्रीत ठीक झालेत.

यामुळे आपल्याला ऋषि मुनींचे आमार मानले पाहिजेत. ज्यांनी सहजयोग शोधून काढला. पाहिल्यांदा एक दोन माणसंच सहजयोग जाणत होती. पण आज अशी वेळ आली आहे की आपल्याला सामूहिक पध्दतीने जागृती मिळू शकते. या त-हेची जागृती झाल्यामुळे शारीरिक, मानसिक, वैधिक आणि संसारिक त्रास दूर होतात. आणि लक्ष्मीचाही आपल्यावर आशिर्वाद येतो. लक्ष्मी, सरस्वतीदेवीचे सक्तात मिळाले म्हणजे त्यामुळे आम्हांला वाटले की हे सर्व होतच नाही. याला सिध्द करण्याची वेळ आली आहे. ऑस्ट्रेलियामध्ये दोन पद्दत झालेल्या व्यक्ति सहजयोगामुळे बऱ्या झाल्या. आपल्या देशामध्ये इतक्या व्यथा आहेत, इतकी गरीबी आहे, लोकांजवळ पैसा नाही. आपले रोग ठीक करा, डॉक्टरची बिले भरा, यांसाठी पैसा नाही, अशा लोकांसाठी सहजयोग फार उपयुक्त आहे. सहजयोगामुळे आपली शेती, पशुपालन यांवर खूप प्रभाव पडतो. अनेक क्षेत्रांमध्ये याचं कार्य होऊ शकतं. सहजयोगामुळे आपल्या आत शांती प्रस्थापित होते. ज्यांच्या आंतमध्ये शांती नाही ते बाहेर कशा प्रकारे शांती प्रस्थापित करणार?

आपल्या आंतमध्ये सक्षीस्वरूप तत्व येते. आपल्या आंत निर्विचार-समाधी स्थापित होते. आणि त्यानंतर निर्विकल्प समाधी म्हणजे चेतना आपल्यामध्ये येते. आपल्या नसांनांसावर सामूहिक चेतना जागृत होते. ज्याच्या अनुसंधानामुळे तुम्ही जाणू शकता की. दुस-या माणसाची तक्रार काय आहे? आणि आपल्याला काय तक्रार आहे? कायय कमी आहे? त्याला नीट करण्याची क्रिया जर आपण शिकलांत, तर आपण दुस-यांना सुद्धा मदत करू शकतां. आणि स्वतःलासुद्धा मदत करू शकतां. यासाठी आपल्याला पैसे वगैरे कांही घावे लागत नाहीत. जी व्यक्ति परमत्माच्या नांवावर आपल्याकडून पैसे घेते तो आपला गुरू नाही नोकर आहे. मी एक माई आहे आणि मी हे सांगेन की ज्या गुरूने आपली तब्येतच ठीक ठेवली नाही अशा गुरूला ठेवून काय फायदा? गुरू दर्शनासाठी नसतो. गुरू ज्ञानासाठी असतो आणि अनुभवासाठी असतो. अशा त-हेने वाचून आपण परमत्माच्या जाणू शकत नाही. कारण परमत्मा बुद्धीच्या पलीकडे आहे. प्रश्न विचारून किंवा त्याचे उत्तर देऊन, कुंडलिनीचे जागरण होइल कां?

अमीबाहून आपण मनुष्य स्वरूपांत आलो. याहून उच्च एकच दशा आहे की आपल्याला आत्मस्वरूप सा पाहिजे. आणि जोपर्यंत आपण आत्मस्वरूप होत नाही, आपल्याला चैन पडणार नाही. आपलीच संपत्ती आपल्याल देण्यासाठी आली आहे. त्यांत आपल्याला कां त्रास झाला पाहिजे? आपल्या आंत एक मोठा हिरा चमकतो आहे ज्याला आत्मा म्हणतात. याला प्राप्त करा. मानव सर्वांत मोठी गोष्ट आहे उत्क्रांतीप्ये. त्याला बस, पचदं च पा करायचं आहे. रशियाचे लोक खूप गहनतेत आहेत. त्यांनी कधी आपला धर्म ऐकला नाही. देवीचं नांव ऐव ऐकलं नाही. पण हे लोक एकदम पार झाले. इतक्या शुध्द प्रकृतीचे लोक जे आंतून शोधत आहेत सत्य. त्यांचा सरकारनेसुध्दां आम्हांला मान्य केले आहे. सैबेरियापर्यंत सहजचोपसरला आहे. वैद्यकीय बाबतीत, शिक्षणांत, प्रत्ये गोष्टीत, त्यांच्या मंत्रयापर्यंत, त्या लोकांत अहंकार नाही. त्यामुळे कदाचित या त-हेने कार्य झालं आहे. इथेसुध्द अशाप्रकारे कार्य होइल अशी आशा आहे. हे तर देवीचे पार मोठे स्थान आहे. आणि कलकत्याहकडून मला स जास्त अपेक्षा आहे.